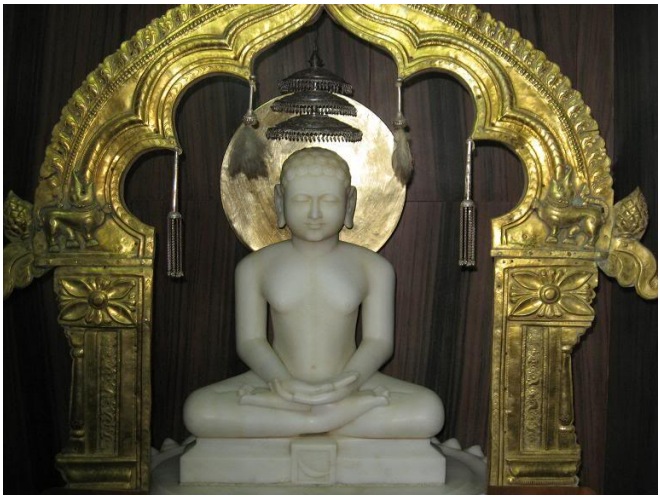

श्री चन्द्रप्रभ जिन पूजा

(रचयिता–आचार्यश्री विमर्शसागर जी महाराज)

तर्ज - जहाँ डाल-डाल पर सोने की....

हे चन्द्रप्रभ भगवान हृदय से, तुमको हृदय बुलाऊँ।
हे नाथ ! हृदय में पाऊँ, हे नाथ ! हृदय से ध्याऊँ।
निर्मल भावों से आह्ववानन, स्थापन कर पधराऊँ।। हे नाथ...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्ववाननम्।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल

मिथ्यात्व मलिनता के कारण, निज ध्रुवस्वरूप न जाना,
हे नाथ ! असंयम अनुभव से, चारित्र नहीं पहिचाना—
चारित्र नहीं पहिचाना।।
रत्नत्रय जल से जन्म जरा मृतु तीनो रोग नशाऊँ। हे नाथ

ॐ ह्री श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलम् निर्व. स्वाहा।

चंदन

पर संयोगों की ज्वाला में, झुलसा संताप बढ़ाया,
पर का कर्ता बन-बन करके, उपयोग सदा दहकाया—
उपयोग सदा दहकाया।।
स्वातम शीतलता अनुभव कर संसार ताप विनशाऊँ। हे नाथ...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व.स्वाहा।

अक्षत

दिन-रात आसव्र-भावों का, व्यापार बढ़ाता आया,
कर्मोदय-सत्ता के कारण, संसार-पदों को पाया—
संसार-पदों को पाया।।
अविनाशी अक्षय-पद पाने संसारी पद ठुकराऊँ। हे नाथ...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

काषायिक परिणति अनुभव, कर इच्छाओं को उपजाया,
हे नाथ ! चार गति चौरासी-लख, पर्यायों को पाया—
सब पर्यायों को पाया।।
अकषाय स्वभाव करुँ अनुभव, काषायिक भाव हटाऊँ। हे नाथ...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व.स्वाहा।

नैवेद्य

हे नाथ ! असाता के कारण नित क्षुधा वेदना पाई,
नहिं जाना भक्ष्य-अभक्ष्य कभी, रसना ने ली अंगडाई—
रसना ने ली अंगड़ाई।।
मैं निजरस-स्वादी बनूँ अहा! यह क्षुधारोग विनशाऊँ। हे नाथ...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

दीप

मोही बनकर भवसागर की लहरों पर नित उछला हूँ,
निर्मोह-स्वभाव नहीं जाना संबंधों में मचला हूँ—
संबंधों में मचला हूँ।।
मोहांधकार हो नाश मेरा नित यही भावना भाऊँ। हे नाथ...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं ! निर्व.स्वाहा।

धूप

सिद्धों सा वैभव पाकर भी निज स्वाभिमान न जाना,
शुभ-अशुभ विभावों को अपना ऐश्वर्य सदा ही माना—
ऐश्वर्य सदा ही माना।।
आठों कर्मों का दहन करूँ भगवती-आत्मा ध्याऊँ। हे नाथ...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल

हे नाथ ! बंध फल में अब तक रति-अरति भाव उपजाए,
संवर-निर्जरा मोक्षफल के नहिं उत्तम भाव सुहाए—
नहिं उत्तम भाव सुहाए।।
अब मोक्ष महाफल पाने को मैं परमसमाधि गाऊँ। हे नाथ...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

अर्घ्य

हाथों में मंगल द्रव्य लिए मंगल भावों को लाया,
दो चंद्रप्रभ भगवान मुझे जो निज अनर्घपद भाया—
जो निज अनर्घपद भाया।।
वसु मंगल द्रव्य समर्पित कर शुद्धात्म शिवालय आऊँ। हे नाथ...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्व. स्वाहा।

पंच कल्याणक अर्घ

चन्द्रप्रभ गर्भ में आये, उत्सव तिहुँलोकों छाये।
पंचमी वदि चैत सुहाई, माँ सुलक्षणा हर्षाई।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण पंचम्यां गर्भकल्याणक मंडिताय श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्में त्रिभुवन के स्वामी, वदि पौष इकादशि नामी।
पितु महासेन हर्षाये, इन्द्रादिक शीष नवाये।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण एकादश्यां जन्मकल्याणक मंडिताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि पौष ग्यारसी आई, भगवति जिनदीक्षा पाई।
दुर्द्धर तप को स्वीकारा, रागादि भाव निरवारा।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण एकादश्यां तप कल्याणक मंडिताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दिन फागुन वदि सप्तमि का, उद्योत ज्ञान रश्मि का।
चउघाति कर्म नशाये, अरिहंत प्रभु कहलाये।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण सप्तम्यां केवलज्ञानकल्याणक मंडिताय श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन सित सप्तमि आई, प्रभु ने भवमुक्ति पाई।
इन्द्रादि महोत्सव कीना, सुख अनुभव नित्य नवीना।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन शुक्ल सप्तम्यां मोक्षकल्याणक मंडिताय श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

चन्द्रप्रभ भगवान के चरण कमल सिरनाय।
नाथ ! आप सम बन सकूँ, भाव हृदय हुलसाय।।

जय-जय-जय अष्टम् तीर्थंकर, जय आत्म हितंकर शिवशंकर।
जय करुणासागर भवदुःखहर, जय मुक्ति नागर श्रेयसकर।।

थी चंद्रपुरी नगरी प्यारी, जहाँ आप हुये प्रभु अवतारी।
इन्द्रों ने किया उत्सव हर्षा, तीनों लोकों में सुख वर्षा।।

आयु दस लाख पूर्व पाई, तन शत-पचास धनु ऊँचाई।
पितु महासेन रोमांच करें, माँ सुलक्षणा उर हर्ष धरें।।

बिजली की चमक दिखी जिस क्षण, वैराग्य हृदय जागा तत्क्षण।
आ देव ऋषि अनुमोद करें, ध्रुव-अध्रुव क्या प्रभु शोध करें।।

यह सब क्षण भंगुर जीवन है, अध्रुव है अहो ! विनाशी है।
चैतन्य प्राण से अनुप्राणित, जीवन अखंड अविनाशी है।।

अब नित्य त्रिकाली शुद्ध-बुद्ध, भगवान आत्मा ध्याऊँगा।
जो सिद्ध असंख्य प्रदेश बसा, शरणागत हो प्रगटाऊँगा।।

विमला शिविका पर हो सवार, सर्वार्थ नाम उद्यान गये।
अपरान्ह भगवती जिनदीक्षा, संग सहस नृपति मुनिराज भये।।

त्रय दिवस बाद क्षीरान्न लिया, पंचाश्चर्य तव प्रगट हुये।
नृप सोमदत्त गृह तीर्थ हुआ, नलिनापुर वासी धन्य हुये।।

अपरान्ह प्रगट कैवल्यज्ञान, छद्मस्थ काल त्रय माह रहा।
जिस-जिसने झेली दिव्यध्वनि, सब भविकों का कल्याण अहा।।

सम्मेद शिखर का ललितकूट, निर्वाण स्थली कहलाता।
निर्वाण मार्ग वह पाता जो, निर्वाण भावना को भाता।।

हे चंद्रप्रभ भगवान हमें, निर्वाण महापद मिल जाये।
श्री चरणों में कोटि प्रणाम, निज आतम बगिया खिल जाये।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्रप्रभ भगवान की, करे भक्ति निज भाव।
शुभ 'विमर्श' शुभ आचरण, मिले मुक्ति की छाँव।।

(परि पुष्पांजलिं क्षिपामि)